



# दिल के राज

बेहतर सीखो सही सोचो और मुकम्मल तौर पर अमल करो

अल्लाह की मदद नुसरतें बरकतें रहमतें रुकावटें नागवारियां हादसा इम्तिहान और फितना सब अल्लाह ही की तरफ से किसी न किसी वजह से सीधी दिलों में, माहोल में और असबाब में उतरती है

अपने चैन व सुकून के लिए लोगों की गलतियों को माफ करो और उनका उज़र कृबुल करो

गुस्सा चिड़चिड़ापन तफक्कुर शौरो गुल बदइखलाकी, खुदगरजी Wrong Attitude और कॉमन सेन्स की कमी को न आने दो

तजुर्बा है नहीं लेकिन तजुर्बाकार की मानना भी नहीं ऐसा मत करो

राज को ना छुपाना और हर बात हर को जाहिर करना

इस बात को भुला देता है कि किस के साथ कितना रहना है और कितनी दूरी इखतियार करना है

तकबुर बदमिजाजी, अहम, वहम रिया (दिखावा) झूठ, बेईमानी, और धोकाबाजी

नाइसाफी ज़ियादती जुलमोसितम और हक्क तलफी Negative Issues शैतान के खास जाल हैं

**हज़रत मोहम्मद (स:) की सुन्नतें**  
**इरशादात**  
**आदात व अख्लाक**

(हर अमल को इन मुबारक सिफात के साथ बदन से जाहिर करें खवाहि I, सोच, वसवसा को दबा देना या कुरबान करना इन मुबारक सिफात की इतात के लिये)

हसद जल्दबाजी, इनकिलाबी, और तंग मिजाजी पुखा इरादा और अमल में पाबंद ना होना

मायूसी खामाखां का खौफ, असबाब और लोगों पर भरोसा अंजाम से बेखबर गुनाह ऐशपरस्ती और फुजूल खरवी। डिसऑरगेनाइज़

## दिल की कुंजी

गुनाह से नफरत, तनहाई, नेकनियती, अल्लाह को

राजी करने के जजबात (इखलास)

दुनिया के पीछे ना दौड़ना (chase)

यानि थोड़ी सी दूरी इखतियार करना

(Withdraw) और Switch off होना भी सीखना है

हर चीज को पहले सुन्नत की रोशनी में

परखें (scan) फिर दिल में भेंजें

माहोलियाती असरात, माजी की याददाशत कीना और नाशुकरी

दुनिया के पीछे ना दौड़ना (chase) Panic Attacks को बुहत जलदी दिल में भेंज कर खराबी पैदा करते हैं।

शैतान उपर दिखाए गए सरकल दाएरे को उकसाता है दिल में भेजने के लिए।

शैतान नये नये खियालात और सोच को दिल और दिमाग में डाल के

आमाल से गाफिल कर देता है।

दुनिया के उलझनों में फंसकर यहाँ से आखिरात का मोती लेने, मोत और कयामत की खतरनाक मनज़र को भूलना नहीं

सिर्फ हक्क (कुरआन, सुन्नत, शरीयत, तकवा दावत की काम और खुदा की हुक्म की अजमत) और इन्तिहाई ज़रूरी चीज़ें ही हमारे दिल को छुएँ, और इस बात की कोशिश करें के गुनाह, वातिल कुफ, शिर्क, निफाक, बेहयाई बिदअत और गोरअहम चीज़ें हमारे दिल में जगह ना पा सकें

पंचइन्द्रियों (5 Senses, आँख, कान, नाक, ज़बान, दिमाग), को काबू में रखना है। नागवारी और रुकावटें अगर सामने आ जाएँ तो ये पंचइन्द्रियाँ बेकाबू ना हो जाएँ, दुनिया के असबाब और लोगों की हरकतों की वजह से। सोच, बातचीत और ख्वाहिश को काबू में रखना, जैसे के घुड़सवार अपने घोड़े की लगाम को काबू में रखता है।

वह तमाम बुरी आदतें व खसलतें जो बचपन से हमारे दिलों के चारो तरफ पैदा हुई है, और आईन्दा होने वाली हैं, इन सब को जड़ से खतम करना है

खतरनाक हालत सर पर टपकने वाली है, खाने पीने की बुरी आदतें, पान, तम्बाकू के नशे को मामूली बात समझने की वजह से। टेंशन, उलझने (Stress) और बीमारी को मामूली समझना, अन्जाम के एतबार से खतरनाक है। ये बात बिल्कुल सच है कि जहाँ-जहाँ पर हमारी कमजोरियाँ हैं शैतान उसी रास्ते से खामोशी के साथ हमारे अन्दर घुसकर हलाकत के सबब पैदा करता है।

(प्रोफेशन और तिजारत का इल्म न होना और मुआमलात की पहले से सफाई न करना) हर काम का एक उर्सूल होता है शौतान भुला देता है,

वक़्त का जाया करना, किस वक़्त कौनसा काम

करना इसको भूल जाना

बेवकूफी सुस्ती काहली गफ़लत अन्धेरा और हद से तज़ाउज़ को भी डालता है

- अल्लाह का खौफ
- अल्लाह का ज़िक्र
- और ज़िम्मेदारियाँ

(कसरत से अल्लाह का जिक्र और दावत के काम से अपने ईमान और यकीन को मजबूत करें। अल्लाह के जिक्र को इस तरीके से दिलों में डालो जैसे धागा सूई में डालते हैं। सोच वसवसा और ख्वाहिश कल्ब को न छुए।)

बेकार चीज़ों पर तवज्जो डालना, असल चीज़ों को भूल जाना और मौजूदा तकलीफ को नज़र अनदाज़ करना भी शैतान का अहम काम है

अहम चीज़ों को भुला देना और दूसरे के बारे में पहले से हि बदगुमान हो जाना

जिहालत गैर-ज़िम्मेदारियाँ, गुमराहियाँ और सादगी को तर्क करना

जब दिल बहुत परेशान हो, हर कामों में रुकावट हो और शैतान का एक के बाद एक हमला हो रहे हों तो तनहाई में रहना और अल्लाह के रास्ते में निकल जाना। वक़्त को बरबाद न करना, चुप रहना, हक़ वालों के हक़ अदा करना और अपने घर वालों के साथ अच्छा सूलूक करना।

email: [wisdominlife@msn.com](mailto:wisdominlife@msn.com) [www.wisdominlife.net](http://www.wisdominlife.net)

हमारी जिन्दगी हक़ और हकीकत से बहुत ही दूर है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस दुनिया को दारूल असबाब बनाया है और ऐसा सजाया है जिसके अन्दर राहत भी छुपी हुई है और हलाकत भी छुपी हुई है। अब हमारी मर्जी कि हम क्या कबूल करें हलाकत या राहत? इज़्ज़त की चीज़ कबूल करने से इज़्ज़त मिलती है ज़िल्लत की चीज़ कबूल करने से ज़िल्लत मिलती है। हम लोग कमज़ोर हैं इसी लिए दुनिया के असबाब को बिल्कुल इन्कार नहीं कर सकते, दुनिया के असबाब हमारी मदद के लिये बने हैं, लेकिन यह असबाब हमारी उस वक़्त तक मदद करेंगे जब तक कि हम इनको अल्लाह के हुक्म, मन्था और हुज़ूर स. की सुन्नत के मुताबिक इस्तेमाल करेंगे, लेकिन किसी भी हाल में असबाब के यकीन को दिलों में नहीं रख सकते। असबाब को अरबाब की मकाम नही दे सकते, यकीन सिर्फ़ खुदा की जातेआली पर ही रहेगी। हर हाल में अल्लाह और रसूल स. की मुहब्बत और इताअत हमारी सबसे बड़ी तरजीह होगी। राहत व आफियत के लिए (De-Stress) अपनी सोच, समझ और बात चीत को काबू में रखना है और सुन्नत और शरीअत के हिसाब से इस्तेमाल करना है। मगर यह बात पैदा हो नहीं सकती जब तक कि दिल में इमान, यकीन और हिदायत का नूर न हो। और ये नेमत हासिल होती है दीन की मुख्तलिफ़ मुबारक मेहनत और मुजाहेदा की बरकत से। जैसा कि दावत की मुबारक मेहनत। "दिल के राज" और "रूह की पाकीज़गी" इस वेबसाइट से डाउनलोड करें [www.wisdominlife.net](http://www.wisdominlife.net)